सत्र समापन के अवसर पर माननीय अध्यक्ष महोदय का उद्‌बोधन

(बुधवार, दिनांक 23 दिसम्बर, 2015)

चतुर्थ विधान सभा के षष्टम सत्र का आज अंतिम दिवस है । यह शीतकालीन सत्र बुधवार, दिनांक 16 दिसम्बर से प्रारंभ हुआ और आज यह 5 दिवसीय सत्र समापन की दिशा में अग्रसर है । मैं आप सभी माननीय सदस्यों की प्रशंसा करता हूँ और बधाई देता हूँ । पक्ष एवं प्रतिपक्ष के सदस्यों ने जिस संयम एवं संसदीय मर्यादाओं एवं परम्पराओं का पालन करते हुए संसदीय दायित्वों का निर्वहन किया, वह उल्लेखनीय रहा ।

वस्तुतः यह सभा प्रदेश की ढ़ाई करोड़ जनता की आकांक्षाओं का, और अभिलाषाओं को प्रतिबिंबित करने का वह पवित्र स्थान है, जहां जनता के द्वारा चुने हुए जन–प्रतिनिधि जनकल्याण हेतु सतत् प्रयत्नशील हैं तथा आपने अपने कार्य व्यवहार से यह सिद्ध भी किया है ।

हमारा छत्तीसगढ़ राज्य कृषि प्रधान राज्य है और हमारी संपूर्ण अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है देश के बहुत कम ऐसे राज्य हैं जहां उनके वार्षिक बजट में कृषि बजट को पृथक से प्रस्तुत किया जाता है, हमारा छत्तीसगढ़ राज्य उसमें से एक है, राज्य के किसान साथियों के प्रति राज्य के निर्वाचित जनप्रतिनिधि और यह सदन अत्यंत संवेदनशील है।

आपको विदित ही है कि इस वर्ष राज्य में अल्प वर्षा की वजह से किसान भाईयों को प्रतिकूल परिस्थितियों से गुजरना पड़ रहा है। उन्हें इस स्थिति से उबारने के उद्‌देश्य से आपने इस सत्र के दौरान स्थगन प्रस्ताव के माध्यम से शासन का ध्यान आकर्षित करते हुए जो सारगर्भित चर्चा की यही सजगता और संवेदनशीलता छत्तीसगढ़ का स्वर्णिम भविष्य तय करेगी।

मैं माननीय सदस्यों की इस भावना से भलीभॉति भिज्ञ हूं कि वे जन–समस्याओं को, जन–आकांक्षाओं को सभा में उठाने और सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं । उनका उद्‌देश्य यह रहता है कि किसी–न–किसी माध्यम से उनकी बातें सदन में आ जाए, किन्तु नियम एवं परम्पराओं की कसौटी में अनेक अवसरों पर माननीय सदस्य उनकी बातों को सभा में नहीं उठा पाते हैं और ऐसे अवसरों पर उनमें उत्तेजना का भाव आ जाता है । मेरा सदस्यों से आग्रह है कि उत्तेजना के क्षणों में भी संयम रखना ही संसदीय प्रणाली का मूल तत्व है, क्योंकि यह सदन वाद–विवाद के माध्यम से असहमति से सहमति की ओर जाने का एक प्रभावी मंच है ।

मुझे इस बात का हार्दिक संतोष है कि छत्तीसगढ़ की चतुर्थ विधानसभा संसदीय मूल्यों और परंपराओं के संरक्षण हेतु वचनबद्ध है। पक्ष एवं प्रतिपक्ष में अन्यान्य कारणों से विचारधारा का अंतर और मतभेद के बावजूद भी सहृदयता, सद्‌भाव एवं सौहार्द्र ही आदर्श लोकतंत्र का मूलमंत्र है और मुझे यह अभिव्यक्त

करते हुए अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि इस सदन के पक्ष–प्रतिपक्ष में सहृदयता और सद्भाव का भाव जीवंत रूप में परिलक्षित हुआ है। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी और माननीय मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल ने सदन में कही गई अपनी बात के संदर्भ में जिस विनम्रता से अपनी चूक को स्वीकारा या अपनी बात को वापिस लिया, वह इस सदन के संसदीय आचरण की श्रेष्ठता का अद्वितीय उदाहरण है।

इस शीतकालीन सत्र की यह उपलब्धि हमारे लिये महत्वपूर्ण है कि इस सत्र में सदन में गतिरोध का समय न्यून रहा और प्रति दिन अतिरिक्त समय में बैठकर प्रत्येक उस विषय पर विस्तृत और व्यापक चर्चा हुई जो लोकमहत्व और लोककल्याण के लिये आवश्यक थी । चर्चा के माध्यम से समस्त माननीय सदस्य समस्याओं के सामयिक समाधान हेतु पूर्ण वचनबद्ध नजर आये, मैं आपके इस संसदीय व्यवहार की मुक्त कंठ से प्रशंसा करता हूं।

आपका संसदीय व्यवहार आपकी सजगता एवं लोककल्याण के प्रति आप माननीय सदस्यों की वचनबद्धता इस बात का प्रमाण है कि आप सभी माननीय सदस्यों में उच्च संसदीय संस्कार विद्यमान है और यही संस्कार भविष्य में इस सदन की गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखते हुए संसदीय मूल्यों के संरक्षण की दिशा में आदर्श प्रस्तुत करते रहेंगे।

इस 5 दिवसीय सत्र में विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं से लगभग 3100 से अधिक छात्र–छात्राओं सहित 6000 से अधिक लोगों ने सदन की कार्यवाही का प्रत्यक्ष अवलोकन किया। इस 5 दिवसीय लघु सत्र में इतनी अधिक संख्या में छात्र–छात्राओं का सदन की कार्यवाही अवलोकन करना छत्तीसगढ़ विधानसभा के लिये एक उपलब्धि है कि शैक्षणिक संस्थाओं के युवा छात्र–छात्राओं को संसदीय शासन व्यवस्था से सीधे तौर पर जोड़ने में एक सार्थक पहल करने में सफल रही है। माननीय सदस्यों से मेरा आग्रह है कि अपने विधानसभा क्षेत्र के शैक्षणिक संस्थाओं के छात्र–छात्राओं को विधानसभा परिभ्रमण में सहयोग करें जिससे कि प्रदेश के अधिकतम छात्र–छात्राएं राज्य की इस सर्वोच्च प्रजातांत्रिक संस्था की कार्यप्रणाली और महत्व को सहजता से समझ सके, युवा पीढ़ी की इस संस्था के प्रति विश्वास से ही संसदीय प्रणाली पुष्ट होगी ।

इस सत्र में वित्तीय कार्य और विधायी कार्य, निर्धारित व्यवस्था के अनुरूप पूर्ण किये गये इस कार्य में सहयोग के लिये आप सभी माननीय सदस्यों को मैं धन्यवाद देता हूं।

इस शीतकालीन सत्र में सदन की कार्यवाही के सांख्यिकी आंकड़ों से मैं आपको अवगत कराना चाहूंगा। इस सत्र के कुल 5 कार्य दिवसों में कुल 27 घंटे चर्चा हुई। इस सत्र में 986 प्रश्नों की सूचनाएं प्राप्त हुई जिनमें ग्राह्य तारांकित प्रश्न 352 एवं अतारांकित प्रश्नों की संख्या 329 रही। जैसा कि मैने आपकों पूर्व में उल्लेख किया है कि इस सत्र में अविलंबनीय लोक महत्व के प्रत्येक विषयों पर विभिन्न माध्यमों के तहत सदन में चर्चा हुई। इस सत्र में नियम 139 के अंतर्गत चर्चा हेतु कुल 11 सूचनाएं प्राप्त हुई। इस सत्र में 8 अशासकीय संकल्प प्राप्त

हुए। इस सत्र में कुल 114 स्थगन प्रस्ताव की सूचनाएं प्राप्त हुई जिनमें से एक विषय से संबंधित 37 स्थगन प्रस्ताव की सूचनाओं को ग्राह्य कर सदन में चर्चा हुई। अग्राह्य स्थगन प्रस्तावों की संख्या 77 रही। इस सत्र में शून्यकाल की 47 सूचनाएं प्राप्त हुई जिनमें से 32 सूचनाएं ग्राह्य व 15 सूचनाएं अग्राह्य रही।

इस सत्रकाल में माननीय सदस्यों ने पुस्तकालय, संदर्भ एवं अनुसंधान सेवा का उपयोग किया । सभा के कार्य के संबंध में पुस्तकालय से 89 साहित्य उपलब्ध कराया गया तथा विभिन्न विषयों पर 72 संदर्भ उपलब्ध कराए गए ।

4300 विजिटर्स ने विधान सभा की वेबसाइट का अवलोकन किया ।

चतुर्थ विधानसभा के इस षष्ठम सत्र में कुल 276 ध्यानाकर्षण की सूचनाएं प्राप्त हुई जिनमें 39 सूचनाएं ग्राह्य व 199 सूचनाएं अग्राह्य रही। इस सत्र में कुल 13 विधेयक लाए गए सभी विधेयक पारित हुए। इस सत्र में विभिन्न विभागों से प्राप्त कुल 11 प्रतिवेदन पटल पर रखे गये तथा लोक लेखा समिति के 8 प्रतिवेदन सभा में प्रस्तुत किए गए । वहीं 13 याचिकाएं भी सदन के पटल पर रखी गई । इसके साथ ही सदन के महत्वपूर्ण कार्य, वित्तीय कार्य, अनुपूरक मांगों को पुर्नस्थापन का महत्वपूर्ण कार्य भी निष्पादित हुआ।

इस सत्र समापन के अवसर पर पत्रकार बंधुओं के विषय में विशेष रूप से कहना चाहूंगा कि आपने अपनी कलम के माध्यम से अपनी सार्थकता को सिद्ध किया है। मैं पत्रकार दीर्घा के सभी पत्रकार बंधुओं को अपनी ओर से धन्यवाद देता हूं कि आपने सत्रकाल में सदन से संबंधित समाचारों को अपेक्षित स्वरूप में आम जनता के मध्य रखा। इस सत्र समापन के अवसर पर सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी, माननीय विधान सभा उपाध्यक्ष जी, सभापति तालिका के सम्माननीय सदस्य सहित आप सभी माननीय मंत्रियों एवं सदस्यों को आपके सहयोग के लिये धन्यवाद देता हूं।

इस अवसर पर छत्तीसगढ़ विधानसभा सचिवालय के प्रमुख सचिव सहित ऐसे समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का जिनका प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष सहयोग रहा। राज्य शासन के समस्त अधिकारियों/ कर्मचारियों को निर्विध्न सत्र संपन्न कराने में सहयोग देने के लिये मैं उन्हे भी धन्यवाद देता हूं कि आपने अपने उत्तरदायित्वों का गंभीरता से निर्वहन किया। जिला प्रशासन सहित सुरक्षा व्यवस्था में संलग्न अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई देता हूं कि आपने सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था को पूरे सत्रकाल में कायम रखा। उनके समन्वित सहयोग से ही इस सत्र का सुचारू संचालन संभव हो सका। परंपरा रही है कि सत्र समाप्ति के अवसर पर आगामी सत्र की संभावित तिथि सदन को सूचित की जाती है तद्नुसार आगामी **बजट सत्र मार्च माह** में आहूत होने की संभावना है।

वर्ष 2015 का यह अंतिम सत्र है और शीघ्र ही नया वर्ष आने वाला है मैं आप सभी माननीय सदस्यों से आग्रह करता हूं कि छत्तीसगढ़ के इस पवित्र सदन की मर्यादा को अक्षुण्ण रखने का संकल्प लें।

इस अवसर पर मैं आवाह्न करना चाहता हूं कि आइए ! छत्तीसगढ़ राज्य के विकास और समृद्धि के पावन अनुष्ठान में अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर इस पावन मंदिर की प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रखने का संकल्प लें।

धन्यवाद

नववर्ष की अग्रिम शुभकामनाएं

जय – हिन्द, जय – भारत, जय – छत्तीसगढ़